निनाद ललित कला समिति छिन्दवाडा

अध्यक्ष–आनंद बक्षी

हरिभूमि

बातचीत

गायक अश्वनी कुमार ने कहा लौटेगा पुरानी गजल गायकी का युग

'मैंने लब्जों को बरतने का हुनर सीख लिया'

हरिभूमि न्यूज

छिंदवाड़ा। आकाशवाणी, दूरदर्शन के सुप्रसिद्ध गजल गायक अश्वनी कुमार का मानना हैं कि आधुनिक फिल्मी संगीत के युग में गजल गायकी की शास्त्रीय परंपरा टूटती जा रही है। घराना गायकी के गायकी के कलाकारों के लिए इसे बनाए रखना चुनौती पूर्ण हैं। फिर भी पुरानी गायकी के शौकीन श्रोताओं के मूड को देखकर यह भरोसा हैं, एक न एक दिन पुराना दौर जरूर लौटेगा।

निनाद ललित कला समिति द्वारा आयोजित गीत गजल संध्या में अपनी गजल गायकी प्रस्तुत करने आए पाटियाला घराने से जुड़े इस गायक कलाकार ने अपने अनुभव पत्रकारों के साथ बांटे। दुर्ग के रहने वाले श्री कुमार ने 200 साल पुराने गजल गायकी के अपने घराने की गौरवशाली परंपरा को याद करते हुए बताया कि उनके पिता दादा गजल गायकी से जुड़े रहे। अब वह इसका प्रतिनिधित्व कर रहे है। उनके अनुसार गजल गायकी के पुराने दौर में गजल शास्त्रीय रागों पर आधारित थी और उसमें खुदा–ईश्वर की इबादत के साथ सूफी परंपरा का प्रभाव था। उसमें इश्क, मोहब्बत के लब्ज उसी अंदाज में होते थे। यह परंपरा बेगम अख्तर और मेहंदी हसन ने कायम रखी। वर्तमान गजल गायकी के सवाल पर श्री कुमार का कहना पड़ा कि गजल अब इबादत नहीं बल्कि स्त्री प्रधान हो गई है।

10 लाख गजलों का संग्रह

इसमें व्यक्तिगत अहम भी उतना हाबी हैं, जितनी व्यवसायिकता। उन्होंने यह भी माना कि गजल गायकी में व्यक्तिगत और सामाजिक जिंदगी की हकीकत की दास्तां को बयां करने की ताकत हैं। बस उसमें लय और मर्यादा के साथ लब्जों को गाने की जरूरत हैं। उन्होंने एक शेर पढ़ा कि मैंने लब्जों को बरतने का हुनर सीख लिया, मेरे हर दर्द को अब शेर कहा जाता है। श्री कुमार ने भरोसा जताया कि श्रोता लय से हटकर नई गायकी से बोर हो गए है। पुरानी गायकी को सुनने का शौक अब लौट रहा हैं।

दस लाख गजल का संग्रह– गजल गायकी की घराना परंपरा से जुड़े अश्वनी कुमार के पास 10 लाख गजलों का संग्रह हैं। करीब 200 साल पुरानी गजल उनके पास मिल जाएगी। वे एक–दो टीवी सीरियल में गजल गा भी चुके है। गायक अश्वनी कुमार ने बताया कि यह गजल संपदा उन्हें परंपरा के रूप में मिली हैं। वे अपने शार्गिदों को यही अंदाज सिखा रहे है।

देर रात तक गूंजी गजल

लालबहादुर शास्त्री स्कूल में निनाद ललित कला समिति द्वारा आयोजित गजल संध्या में गायक अश्वनी कुमार की एक से एक बढ़कर गजल श्रोताओं को सुनने को मिली। श्री कुमार ने शास्त्रीय संगीत के साथ पुरानी गायकी से श्रोताओं को परिचित कराया। इससे श्रोता भाव विभोर हो गए। उनका कहना था कि ऐसी गायिकी कम सुनने को मिलती है।